झूठी शान

- श्री मुकेश कुमार शर्मा
क. अभियन्ता(सीनियर ग्रेड)

मई की तपती धूप में, डाकू को ख्याल आया,
सिनेमा हाल में फिल्म देखकर, दोपहरी काटने का मन बनाया ।
फिल्म में हीरोइन गजब का रोल निभा रही थी
फ्रिज से आइसक्रीम निकालकर हीरो को खिला रही थी
कभी कोल्ड ड्रिंक तो कभी ठन्डे फल
डाकू ने सोचा कुछ भी हो जाये
हमारे भी घर फ्रिज आ जायेगा कल
पिक्चर की सामाप्ति पर डाकू भूल नहीं पा रहा था
हीरो हीरोइन का आइसक्रीम खाता चेहरा नजर आ रहा था
डाकू ने सोचा कल किसने देखी हैं
हमारे लिए तो एक-एक पल भी भारी होता हैं
और हमारा तो वैसे भी सभी की संपत्ति पर जबरदस्ती का हक होता है
वह अपने आप को रोक नहीं पाया
और आइसक्रीम व ठन्डे फल खाने के लालच में
एक मध्यवर्गीय परिवार में घुस आया
सभी दोपहरी में सोये थे
डाकू सीधा फ्रिज के पास पहुँचा
बड़ी सावधानी से फ्रिज खोला
ये क्या है ? हे भगवान, अपने आप से बोला
कोल्ड ड्रिंक की जगह पानी, आइसक्रीम की जगह बर्फ मुँह चिढ़ा रहा था ।
नीचे की सेल्फ में कई दिन पुराना गुथा आटा
अलग-अलग कटोरियों में पुराना बचा खाना
सब्जी की ट्रे में सड़ा खीरा, सूखा कद्दू
कुछ फलियाँ जो पहचानी नहीं जा रही थी
जिसमें सब्जी मंडी के कचरे जैसी बदबू आ रही थी
डाकू का सारा जोश काफूर हो गया
फिर अपने ख्यालों में खो गया
अरे बाहर से क्या, वास्तविकता क्या बताती है
आधी जनता केवल 'झूठी शान' कमाने के लिए घर में फ्रिज लाती है ।

******